कक्षा - 10

समकालीन भारत - 2

अध्याय - 1

संसाधन एवं विकास

भाग - 3

पंकज वैष्णव

संसाधन एवं विकास

Q. निम्न में से कौन-कौन से संसाधन जैव-संसाधन के अंतर्गत आते है ?

(a) वनस्पति
(b) जीव-जंतु
(c) मच्छर
(d) उपरोक्त सभी

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

Q. निम्न में से कौन-कौन से संसाधन अजैव संसाधन के अंतर्गत आते है ?

(a) हवा
(b) जल
(c) तापमान
(d) मृदा
(e) उपरोक्त सभी

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

Q. संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से निम्न में से कौनसी समस्या पैदा हो गयी है ?

(a) भूमंडलीय तापन ✓ Global Warming.
(b) ओजोन परत अवक्षय ✓
(c) पर्यावरण प्रदूषण ✓
(d) भूमि निम्नीकरण ✓
(e) उपरोक्त सभी ✓

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

संसाधन

- मनुष्य के जीवन यापन के लिए अति आवश्यक हैं
- जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

लेकिन, मानव ने इनका अंधाधुंध शोषण किया है, जिससे कई समस्याएँ पैदा हो गई हैं:-

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

- संसाधनों का ह्रास (कम)
- संसाधन समाज के कुछ ही लोगों के हाथ में आ गए हैं, जिससे समाज दो हिस्सों संसाधन संपन्न एवं संसाधनहीन (अमीर और गरीब) में बँट गया
- वैश्विक पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया है
  जैसे भूमंडलीय तापन, ओज़ोन परत अवक्षय,
  पर्यावरण प्रदूषण, भूमि निम्नीकरण आदि

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

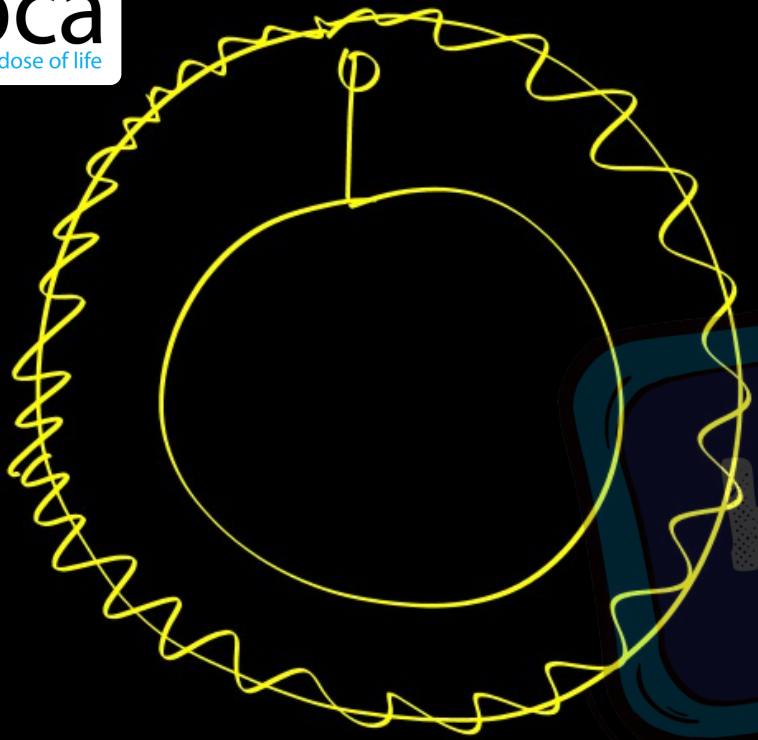



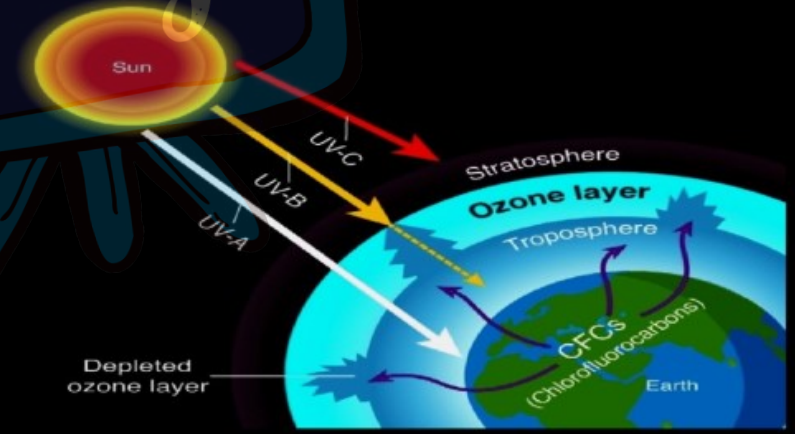

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

- मानव जीवन की गुणवत्ता और विश्व शांति बनाए रखने के लिए संसाधनों का समाज में न्यायसंगत बँटवारा आवश्यक है।
- यदि कुछ ही व्यक्तियों तथा देशों द्वारा संसाधनों का वर्तमान दोहन जारी रहता है, तो हमारी पृथ्वी का भविष्य खतरे में पड़ सकता है।
- इसलिए, हर तरह के जीवन का अस्तित्व बनाए रखने के लिए संसाधनों के उपयोग की योजना बनाना अति आवश्यक है।

संसाधन एवं विकास

कोयला
बिजली

सतत पोषणीय विकास

ऐसा आर्थिक विकास जो:-

- पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए हो
- भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न करे।

संसाधन एवं विकास



पृथ्वी सम्मेलन, 1992

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED)
- प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन
- जून, 1992
- (ब्राजील) रियो डि जेनेरो
- 100 से भी अधिक राष्ट्राध्यक्ष

उद्देश्य:-
- पर्यावरण संरक्षण
- सामाजिक-आर्थिक विकास की समस्याओं का हल ढूँढना

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



संसाधन एवं विकास

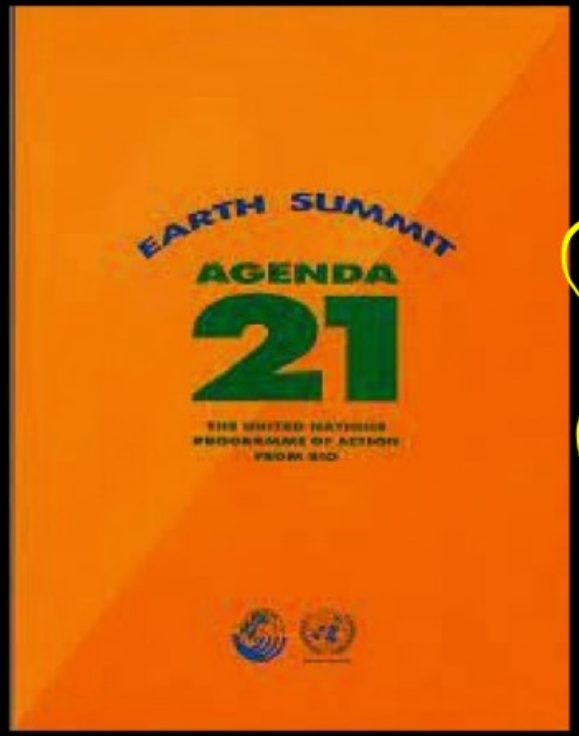

- जलवायु परिवर्तन और जैविक विविधता पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किया।
- वन सिद्धांतों (Forest Principles) पर सहमति
- एजेंडा 21 -21वीं शताब्दी में सतत् पोषणीय विकास के लिए

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

19 → 1800 - 1900

20 → 1900 - 2000

21 → 2000 - 2100

1947 ✓

1900 - 2000



ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

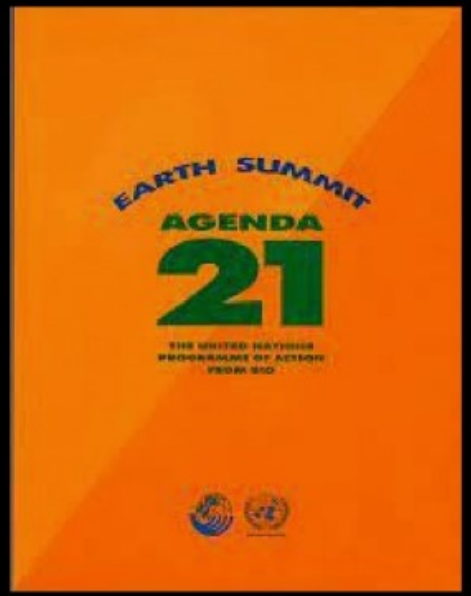

एजेंडा 21

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) के तत्त्वाधान में राष्ट्राध्यक्षों द्वारा स्वीकृत किया गया था।

उद्देश्य :-
- सतत् पोषणीय विकास हासिल करना
- समान हितों, पारस्परिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जिम्मेदारियों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटना

प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना स्थानीय एजेंडा 21 तैयार करे।

संसाधन एवं विकास

संसाधन नियोजन

- संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है।
- भारत जैसे देश में जहाँ संसाधनों की उपलब्धता में बहुत अधिक विविधता है, यह और भी महत्त्वपूर्ण है।
- यहाँ ऐसे प्रदेश भी हैं जहाँ एक तरह के संसाधनों की प्रचुरता है, परंतु दूसरे तरह के संसाधनों की कमी है।
- कुछ ऐसे प्रदेश भी हैं जो संसाधनों की उपलब्धता के संदर्भ में आत्मनिर्भर हैं।
- कुछ ऐसे भी प्रदेश हैं जहाँ महत्त्वपूर्ण संसाधनों की अत्यधिक कमी है।

जैसे झारखंड, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार हैं।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

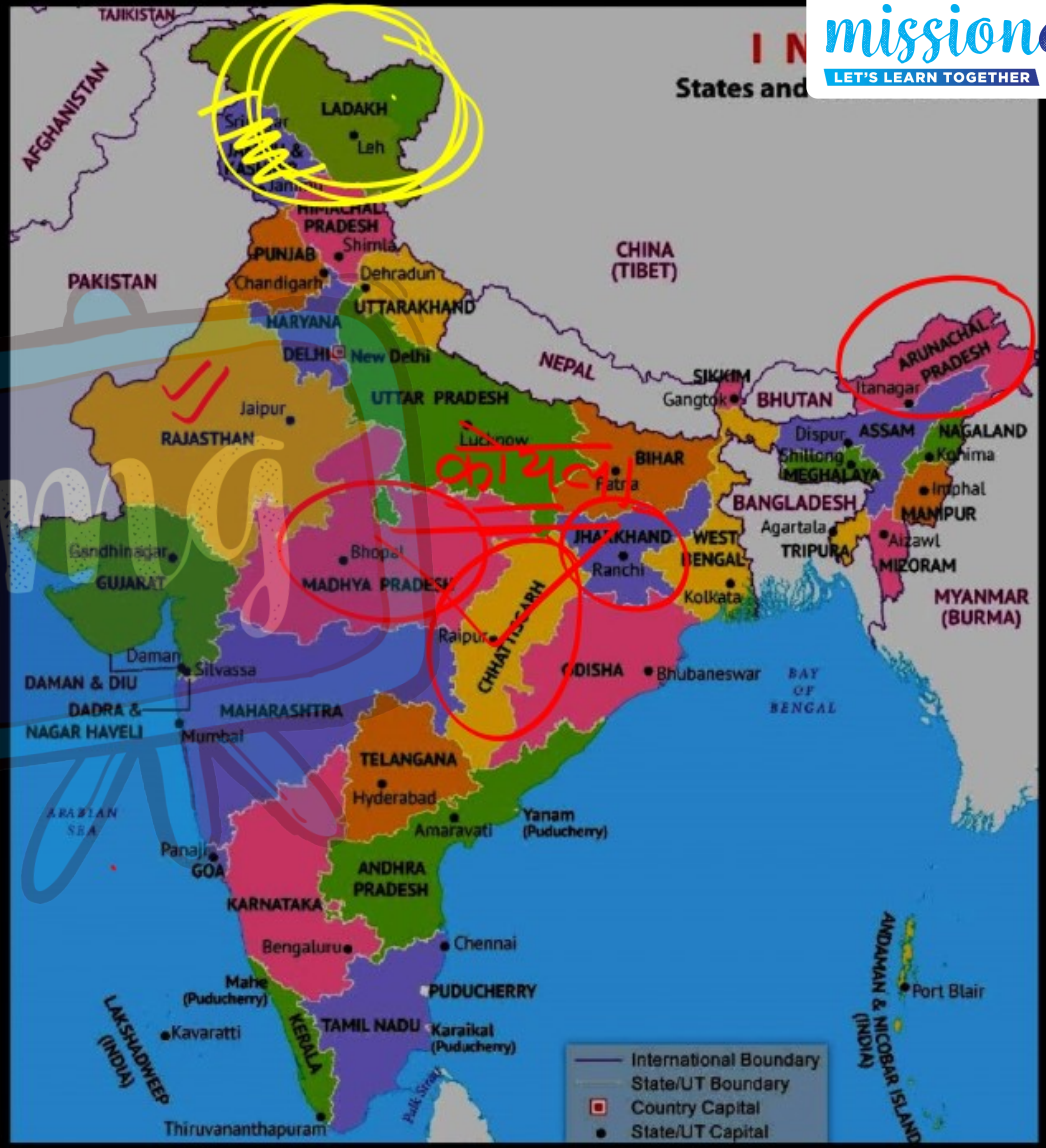

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास





- **अरुणाचल प्रदेश** में जल संसाधन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, परंतु मूल विकास की कमी है।
- **राजस्थान** में पवन और सौर ऊर्जा संसाधनों की बहुतायत है, लेकिन जल संसाधनों की कमी है।
- **लद्दाख का शीत मरुस्थल** सांस्कृतिक विरासत का धनी है परंतु यहाँ जल, आधारभूत अवसंरचना तथा कुछ महत्त्वपूर्ण खनिजों की कमी है।

इसलिए राष्ट्रीय, प्रांतीय, प्रादेशिक और स्थानीय स्तर पर संतुलित संसाधन नियोजन की आवश्यकता है।